Vijaynagar विजयनगर (1336 – 1650)

= विजयनगर साम्राज्य हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने 1336 ई० में स्थापित किया।

[illegible]

⇒ इनके कुल 4 वंश हैं –

1) संगम वंश (1336 – 1485)
2) सालुव वंश (1485 – 1505)
3) तुलुव वंश (1505 – 1570)
4) अरावीडु वंश (1570 – 1650)

संगम वंश :-

1) हरिहर I (1336 – 56) – इसने स्थापना की एवं प्रशासनिक गठन किया।

2) बुक्का I (1356 – 77) – बहमनी शासकों से युद्ध किया और चीन में एक दूत मंडल (group of massenger) भेजा।

3) हरिहर II (1377-1404) फिरोज शाह बहमनी ने उसे पराजित किया।

4) देवराय I (1404-1422) - बहमनी शासकों से कई युद्ध हुये एवं पराजित हुआ। इटली यात्री निकोलो कोण्टी आया था।

5) देवराय II (1426-46) कुछ राजनीतिक अस्थिरता के बाद देवराय II बैठा जो इस वंश का महानतम शासक था। सेना में मुसलमानों को भर्ती किया। अब्दुर्रज्जाक (फारसी यात्री) यहाँ आया।

6) मल्लिकार्जुन (1446-65) - यद्यपि यह दुर्बल शासक था किन्तु राज्य को यथावत बनाये रखा।

2) सालुव वंश (1485-1505) → सिंहासन हथियाकर नरसिंह सालुव ने इस वंश की नींव डाली। विद्रोहों को शान्त किया। अपने पुत्रों को अपना शासक बनाया जो बहुत अधिक शक्तिशाली नहीं था।

③ तुलुव वंश (1505-1570)

वीर नरसिंह ने तुलुव वंश स्थापित किया

कृष्णदेवराय (1509-1530) सह पूरे विजयनगर साम्राज्य का महानतम शासक था।

⇒ विद्रोही समाप्त किये।
⇒ रायचूर दोआब बहमनी से जीता।
⇒ बहमनी राज्य में कठपुतली सरकार बनाई।
⇒ पुर्तगाली यात्री पायस ने इसके राज्य की प्रशंसा की।
⇒ कई मंदिर बनाये एवं कवियों को संरक्षण दिया।

अच्युत राय (1530-1542) - दुर्बल शासक वास्तविक सत्ता रामराय के हाथ में।

सदाशिव राय (1542-1565) दुर्बल सत्ता वास्तविक शक्ति रामराय के हाथों में।

⇒ 1565 में बीजापुर, अहमदनगर गोलकुण्डा, बीदर ने मिलकर विजयनगर

को हराया। इसे तालीकोटा युद्ध का युद्ध कहते हैं।

④ अरावीडु वंश (1570 से 17 वीं शती के मध्य तक)

कुछ राजनीतिक अस्थिरता के बाद तिरुमल ने सदाशिव को हटाकर अरावीडु वंश की स्थापना की।

वेंकट II - 1586 में तिरुमल के बाद रंग II एवं उसके बाद वेंकट II शासक बना जो इसका सर्वाधिक महान शासक था। 1612 में वाडियार राजा ने मैसूर की स्थापना की।

रंग III → यह अंतिम महत्वपूर्ण शासक था।

17 वीं शताब्दी के मध्य तक लगभग 1650 ई० के आसपास यह राज्य समाप्त हो गया।

विजयनगर में हिन्दू धर्म की परंपरागत व्यवस्थाओं को पुनः स्थापित किया। उत्कृष्ट प्रशासन के लिये भी ये जाने जाते हैं।